Impact Factor : 1.883 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
THEME : ENVIRONMENT AND EDUCATION
{Bi-Monthly} Volume – IV Issue – III October 2015

स्वस्थ्य मानवी जीवन और सामाजिक प्रदूषण

डॉ. शैला चव्हाण,
विठ्ठलराव हांडे शिक्षणशास्त्र महाविदयालय, नाशिक.

सामाजिक प्रदूषण यह मनुष्य के दिमाग की उपज है, क्योंकि जब मनुष्य की लालसा बढती है, तब वह अधिकाधिक प्राप्ति की मंशा रखता है l और वह प्राप्ति के लिए सारी हदे पार कर देता है l यहाँ तक की वह अपनी मांगे पूर्ण करने हेतु प्रकृति का शोषण करनेपर भी उतारु होता है l यहाँ उसकी सोचने की शक्ति मानो समाप्त सी होती है l सिर्फ और चाहिए बस इतना ही उसे पता होता है l वही उसका लक्ष्य होता है l उसे किसी भी बातपर संतोष नहीं होता है l मानो जैसे अब बस यह वह भूलही गया हो l परंतु अब प्रश्न यह है, की कितना चाहिए? इस प्रश्न का कोई समाधान शायद ही होगा l क्योंकि नींद से जागने से रात को सोने तक अपनी चाहतों के पिछे मनुष्य दौडता रहता है l क्या कभी ' ये दिल मांगे मोर ' के बदले ' ये दिल कहे ' बस ' ऐसा समय आयेगा? इसका उत्तर तो मुश्किल है l परंतु उत्तर के लिए प्रयास तो करने ही होगे l नहीं तो हम ही हमारे विनाश के उत्तरदायी होगे l इसमें कोई शक नहीं है l

आज प्रदूषण यह किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्या न होकर एक वैश्विक समस्या बन गयी है l और उसका समाधान आज का प्रथम कार्य होगा l क्योंकि कल तक समाज के विकास काल के आरंभ में मानव तथा प्रकृति में एकात्मता थी l इसी कारण मानव पूर्ण रुप से प्रकृतिपर निर्भर था और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति से ही करता था l मानो उस समय प्रकृति मानव की मित्र थी और मानव प्रकृति का l जैसे जैसे मनुष्य अपने तथा अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति को अपना दायित्व समझने लगा, उसने स्वयम् के अस्तित्व के खातिर दूसरों की मानो उपेक्षा करना प्रारंभ किया, जिससे दुश्मनी, स्वार्थ, वैमनस्य तथा प्रलोभन ने उसके जीवन में प्रवेश किया l उसने भूख एवम् आत्मरक्षा के लिए विभिन्न तरीके खोज निकाले l बाद के समय में मानव भूख और आत्मरक्षा के अतिरिक्त सुख – सुविधा तथा अमोद – प्रमोद के लिए भी प्रयत्न करने लगा l यही से उसके भ्रष्ट होने की शुरुआत हुई और वह प्रकृति तथा पर्यावरण की उपेक्षा करने लगा l अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वह पर्यावरण को हानि पहुँचाने से भी नहीं झिझका, किंतु उस दौर में भी मानव जो दुषित घटक पर्यावरण में छोडता था, वह उसकी आवश्यक प्रतिक्रिया थी l जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ, उसने आस – पास के वातावरण को प्रदूषित करने में कोई कमी नहीं की l

आज मनुष्य मात्र का अस्तित्वही मानों खतरे में आया है, उसका प्रमुख कारण है ' प्रदूषण ' l और आज इस प्रदूषण के कारण सारा विश्व चिंता में लिप्त है l विश्व स्तर पर इस समस्या का समाधान खोजा जा रहा है l क्यों कि प्रदूषण याने ' प्राकृतिक संतुलन में दोष निर्माण होना ' और इसके कारण शुध्द हवा, पानी, वायू, खादयपदार्थों के

Impact Factor : 1.883 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
THEME : ENVIRONMENT AND EDUCATION
{Bi-Monthly} Volume – IV Issue – III October 2015

साथ –साथ शांत वातावरण का न मिलना। विज्ञान के इस युग में विज्ञान के वरदान के साथ कुछ अभिशाप मिलना भी लाजमी ही है। प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है, जो विज्ञान की गर्भ में से जन्मा और आज जिसे सहने के लिए सारा विश्व मजबूर है। पर्यावरण प्रदूषण में मानव की विकास प्रक्रिया तथा आधुनिकता का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसी कारण वातावरण में दूशकों का घुलना चाहे उनका जो भी पूर्व – निर्धारित या परस्पर सहमत अनुपात या संदर्भ के प्रारुप रहे हो। ये प्रदूषक भौतिक प्रणालियाँ उनमें रहनेवाले जीव, जंतुओं में अस्थिरता, हानि और परेशानी उत्पन्न करते है।

आज मानव दो प्रकार के प्रदूषण से ग्रस्त दिखाई देता है, ये दो मुख्य प्रकार है।

१. भौतिक प्रदूषण या पर्यावरणीय प्रदूषण
२. सामाजिक प्रदूषण

१. **भौतिक प्रदूषण** या पर्यावरणीय प्रदूषण में मुख्य रुप से जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और भूमि प्रदूषण का समावेश किया जाता है। परंतु सामाजिक प्रदूषण में – १) जनसंख्या प्रस्फोट २) सामाजिक प्रदूषण (सामाजिक एवं शैक्षिक पिछडापन, अपराध, झगडा, फसाद, चोरी, डकैती आदि.) ३) सांस्कृतिक प्रदूषण ४) आर्थिक प्रदूषण (जैसे गरीबी) का समावेश किया जाता है।

सामाजिक प्रदूषण का उद्‌भव भौतिक एवंम्, सामाजिक कारणों से होता है। उस पर विचार विमर्श करना समयोचित ही होगा।

२. **सामाजिक प्रदूषण के उपभाग :**

१) जनसंख्या प्रस्फोट :

यह आज की अत्यंत गंभीर समस्या है। आज हमारे देश का नंबर भी इसमें काफी उपर है। और यह समस्या दिन ब दिन बढती ही जा रही है। इसी कारण अनेकानेक समस्याओं का भी निर्माण हो रहा है। जनसंख्या वृध्दि के अनेक कारण है, परंतु परिणाम गंभीर है। इसमें मुख्य रुप से मनुष्यमात्र की प्राथमिक आवश्यकताएँ पूर्ण करने में भी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। उसमें हर साल अकाल चाहे सुखा हो या चाहे अधिक वर्षा के साथ साथ आज किसी भी मौसम में होनेवाले बारीश समस्या को बढाती ही है। इसी कारण होनेवाली महंगाई से आज सभी परेशान है। जनसंख्या प्रस्फोट के कारण जल, वायु, ध्वनि, भूमि आदि के प्रदूषण की समस्या बढ गयी है। साथ ही में प्रदूषण के कारण आज अनेक बिमारियों का भी हमे सामना करना पड रहा है। नयी नयी बिमारियों से आज परेशानी बढ रही है।

साथ ही में इस जनसंख्या प्रस्फोट भूमि, आनाज, पानी, यातायात के साधन, शिक्षा आदि सबको प्रभावित कर रहा है। बढती जनसंख्या ने इन्सानियत मानों छोड दी है, हर एक अधिकाधिक प्राप्ति के पीछे दौंड रहा है। मनुष्यमात्र में मानों एक होड सी लगी है। आत्यंतिक स्पर्धा के कारण हर एक में आज

Impact Factor : 1.883 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
THEME : ENVIRONMENT AND EDUCATION
{Bi-Monthly} Volume – IV Issue – III October 2015

असुरक्षितता की भावना है, कोई भी आज सुरक्षित न होने के कारण एक मानसिक स्वास्थ्य का अभाव महसूस कर रहे है। अब भी समय है, की हम बढती आबादि के रोके, वैसे भी अगर आज भी कुछ प्रयास नहीं किए तो हम विनाश की ओर चल ही पडे है, ऐसे कहने में कोई हर्ज नहीं है।

२) आर्थिक प्रदूषण :

जनसंख्या वृध्दि ने यह एक समस्या को जनम दिया है। बढती आबादि और सिमित साधनों के कारण गरीब और गरीब तो अमीर और अमीर बनते जा रहे है। इसी कारण अमीरों –गरीबों के बीच की खाई दिन –ब –दिन बढती ही जा रही है। परिणामतः समाज में एक प्रकार की आर्थिक विषमता फैल गयी है। हर एक पैसे के पिछे भाग रहा है। भौतिक सुख प्राप्ति ही एक मात्र जीवन का लक्ष्य सा बन गया है। शिक्षा और नौकरी का संबंध होने के कारण शिक्षा क्षेत्र में जो भीड है, उसका कोई परिणाम नहीं है। एक पद प्राप्ति के लिए सेकडों अर्जि प्राप्त है। और फिर शुरु होते है भ्रष्ट व्यवहार। फिस पैसों की लेन – देन ही महत्त्व रखती है। व्यक्ति और पद की काबिलियत का कोई संबंध नहीं होता है। जिसके पास पैसा वही शेर बनता है। आर्थिक अभाव में मिले वह काम करने पर व्यवसाय समाधान का अभाव बना रहता है। आर्थिक विषमता की खाई इतनी गहरी होती है की इसे पार करना असंभव बनता जा रहा है। इसी कारण सामाजिक परिवेश में सामाजिकता का अभाव प्रतित हो रहा है।

३) सांस्कृतिक प्रदूषण :

आज की एक गंभीर समस्या उभरती हुई दिखाई देती है, वह है, सांस्कृतिक प्रदूषण। आज का युग बहुसांस्कृतिक समाज का युग बनता जा रहा है। इस Multicultural समाज में एकात्मता का होना असंभव होगा। हम सब यह अच्छी तरह से जानते है की हम अपना धर्म, वंश, जाति, रुढी –परंपराएँ, उत्सव – त्यौहार और सामाजिक मान्यताओं के प्रति अत्यंत सजग एवम् संवेदनशिल होते है। उपर्युक्त बातों में हमें उन्नीस – बीस का फर्क भी स्वीकार नहीं होता है। अब प्रश्न यह है की शिक्षा, पर्यटन और भूमंडलिकरण के कारण विश्व एक ग्राम बन गया है। कोई भी कही पर भी जाकर बस सकता है, अपना व्यापार – कारोबार बढ सकता है, शिक्षा प्राप्त कर सकता है, तब हर एक ग्राम और शहरों में सामाजिक विभिन्नता का होना अनिवार्य सा बन गया है।

अब एक जगहपर अनेक वंश, जाति, धर्म, रुढी – परंपरा, सामाजिक मान्यताएँ और विचारों के लोग रहने लगे तो हर एक अपना ही समर्थन करेगा। सर्वधर्म समभाव का अभाव अगर है, तो वहाँपर झगडे – फसाद होने ही वाले है। और इन झगडों का स्वरुप कितना भयंकर होगा इसके जीते – जागते उदाहरण याने ऑनर किलिंग, इंटरकास्ट–अंतरजातिय मैरेज विवाह का विरोध आदि है। अब प्रश्न यह है की अगर एक भूभाग पर इतने विभिन्न प्रकार के लोग विभिन्न विचारधाराओं से प्रेरित होकर रहे तो वहाँ

Impact Factor : 1.883 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
THEME : ENVIRONMENT AND EDUCATION
{Bi-Monthly} Volume – IV Issue – III October 2015

अमन और शांति की अपेक्षा आज के दौर में निरर्थक ही होगा। क्योंकि आज उपयोग करों और फेंक दो के जमाने में सामाजिक स्वास्थ्य बरकरार रहनेवाला ही नहीं। यहाँ पर प्रदूषित विचार, शांति का माहौल नहीं बना सकते। इसी कारण आपसी रंजीश का स्वरुप भयावह ही होगा। इसी कारण एक दूसरे से खतरा महसूस करने के कारण सामाजिक शांति और स्वास्थ्य के अभाव में सांस्कृतिक प्रदूषण बढ रहा है। और इसके परिणाम हम सब देख ही रहे है।

४) सामाजिक प्रदूषण :

बहुसांस्कृतिकता के कारण सामाजिक स्वास्थ्य पूर्णरुप से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। एक ही जगह पर विभिन्न विचारों से प्रेरित लोगों का शांति के साथ वास करना असंभव होता है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण मत भिन्नता होनी है। अब प्रश्न यह है, की विभिन्न सांस्कृतिक विरासत प्राप्त लोग एक ही समाज में शांतिपूर्ण जीवन कैसे यापन कर सकते है। हर एक को अपना मान – सम्मान, जाति, धर्म, वंश प्रिय होते है। साथ ही में आर्थिक रुप से होनेवाली सामाजिक विषमता इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी कारण समाज में होनेवाले दो वर्गों के बीच का अंतर आज भी कम नहीं हुआ है। आर्थिक अभाव में एक बडा वर्ग आज भी झुग्गीयों में रहता है। वहाँ पर तो शिक्षा की तुलना में पेट पालने के लिए मजदूरी को प्राथमिकता प्राप्त होने के कारण समाज का एक बडा हिस्सा शिक्षा से दूर है। चाहे सरकार कानुन बनाए, सुविधा उपलब्ध करा दे, परंतु उन्हे उनकी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति की खातिर काम करना पडता है। इसी कारण बालमजदूरी की समस्या भी गंभीर रुप धारण किए हुए है। शैक्षिक पिछडेपन की समस्या आज भी दिखाई देती है। शिक्षा का अभाव, आर्थिक विषमता, सामाजिक अस्वास्थ्य, हमेशा असुरक्षितता की भावना से धिरे आज के समाज की मानसिकता जूर्म को जन्म देती है। आसानी से न मिले तो छीन लो की भावना तिव्र बनती है और फिर शुरु होते है झगडे, फसाद, चोरी, डकैती और अंत में खून आदि।

इन सब के कारण ही अराजकता निर्माण होती है। परिणामतः सुरक्षा और सुव्यवस्था में दरारे उत्पन्न होने के कारण सामाजिक स्वास्थ्य गंभीर रुप से प्रदूषित होता है। किसी भी एक को चैन की साँस लेना मुश्किल होता है। इन्हीं सामाजिक अपराधों में आतंकवाद की समस्या भी सामाजिक जीवन गंभीर रुप से प्रभावित करती है। परिणामतः रेल स्टेशन, बाजार, बडे बडे मॉल, मेले, मंदिर यहाँ तक की सोसायटी में भी आज डर का साया मँडराता नजर आता है। सुबह घर से निकला व्यक्ति शाम को घर पर आनेतक चिंता बनी रहती है। इसी कारण व्यक्ति, व्यक्ति के साथ परिवार और परिवारों के साथ समाज का वातावरण प्रदूषित है। इसी कारण अगर हमें चैन और अमन से रहना है तो यह सामाजिक प्रदूषण की और ध्यान देना अनिवार्य बनता है। चाहे कितने अविष्कार हो, सुख – सुविधाएँ हो, परंतु व्यक्ति सुखी नहीं

Impact Factor : 1.883 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
THEME : ENVIRONMENT AND EDUCATION
{Bi-Monthly} Volume – IV Issue – III October 2015

तो इन सभी बातों का कोई महत्त्व नहीं रहता। आखिर कोई भी व्यक्ति क्या चाहता है ? तो वह चाहता है शांतिपूर्ण जीवन। अगर वह प्राप्त करना है, तो पर्यावरण प्रदूषण की गंभीर समस्या के पहले सामाजिक प्रदूषण की रोक थाम का विचार अनिवार्य है, क्योंकि यहाँ सामाजिक स्वास्थ्य और शांति प्राप्ति हुई तो पर्यावरण की सुरक्षा अपने आप होगी। सिर्फ मनुष्य मात्र की मानसिकता सामाजिक प्रदूषण पर रोक लगा सकती है, सिर्फ देर है, सोचने और समझने की अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह स्पष्ट है – अभी नहीं तो कभी नहीं।

संदर्भ :

१. www.google.com
२. www.wikipedia.com